Our problem, one of the many that we have, is how to conserve this energy, the energy that is necessary for an explosion, to take place in consciousness--an explosion that is not contrived, that is not put together by thought, but an explosion that occurs naturally when there is this energy that is not wasted...	हमारी अनेक समस्याएं हैं और उनमें से एक है कि ऊर्जा का संरक्षण कैसे किया जाए--उस ऊर्जा का संरक्षण जो चेतना के प्रस्फुटन के लिये आवश्यक होती है--वह प्रस्फुटन नहीं जो सुनियोजित होता है या जो विचार द्वारा रचित एक जुगाड़ होता है, बल्कि वह प्रस्फुटन जो इस ऊर्जा का अपव्यय न किये जाने पर स्वतः घटित हो जाता है...
We are talking about the necessity of gathering all energy to bring about a radical revolution in consciousness itself, because we must have a new mind; we must look at life totally differently.	स्वयं चेतना में एक आमूल क्रांति लाने के लिये संपूर्ण ऊर्जा को एकत्र करने की आवश्यकता पर हम बात कर रहे हैं, क्योंकि हमारे पास एक नूतन मन होना ज़रूरी है; तो, हमें जीवन को एक नितांत भिन्न दृष्टि से देखना होगा।
CHAPTER SEVEN	**अध्याय सात**
What Is the Purpose of Life?	**जीवन का प्रयौज़न क्या है**
-1-	- १ -
What Is the Purpose of Life?	क्या है जीवन का प्रयोजन?
The significance of life is living. Do we really live, is life worth living when there is fear, when our whole life Is trained in imitation, in copying? In following authority is there living? Are you living when you follow somebody, even if he is the greatest saint or the greatest politician or the greatest scholar?	जीवन की सार्थकता जीने में है। जब हम भयग्रस्त रहते हैं, जब हमारा सारा जीवन अनुकरण करने के लिए, नकल करते रहने के लिए ढाल दिया गया हो तब हम क्या वास्तव में जी रहे होते हैं, तब क्या वह जीवन जीने योग्य रहता है? किसी प्रामाण्य रूप में स्थापित व्यक्ति का अनुगमन करते जाना क्या जीवन जीना है? जब हम किसी के पिछलग्गू बने हुए हों, चाहे वह बड़े से बड़ा संत हो, राजनेता हो या विद्वान हो, तब क्या हम जी रहे होते हैं?
If you observe your own ways, you will	यदि आप अपने तौर-तरीके को ध्यानपूर्वक

Edited with Infix PDF Editor
- free for non-commercial use.
To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm

see that you do nothing but follow somebody or another. This process of following is what we call "living," and then at the end of it you say, "What is the significance of life?" To you, life has no significance now; the significance can come only when you put away all this authority. It is very difficult to put away authority.	देखें तो आप पाएंगे कि आप किसी न किसी का अनुगमन करने के अतिरिक्त कुछ और नहीं कर रहे हैं। अनुगमन के इसी सिलसिले को हम 'जीना' कह देते हैं और इसके अंत में पूछते हैं, ''जीवन की सार्थकता क्या है?'' तब तक आपके जीवन की कोई सार्थकता शेष नहीं रह गई होती है। इसमें सार्थकता तभी आ सकती है जब आप तमाम तरह की मान्यता और प्रामाण्य को एक तरफ हटा दें। लेकिन ऐसा करना आसान नहीं है।
What is freedom from authority? You can break a law. That is not the freedom from authority. But there is freedom in understanding the whole process, how the mind creates authority, how each one of us is confused and therefore wants to be assured that he is living the right kind of life. Because we want to be told what to do, we are exploited by gurus, spiritual as well as scientific. We do not know the significance of life as long as we are copying, imitating, following.	सत्ता-प्रामाण्य से मुक्ति का क्या अर्थ है? आप कोई नियम तोड़ दे सकते हैं, परंतु यह सत्ता-प्रामाण्य से मुक्ति नहीं है। लेकिन इस संपूर्ण प्रक्रिया को समझ लेने से कि मन कैसे किसी प्रामाण्य को निर्मित कर लेता है, हम इसकी जकड़ से मुक्त हो जाते हैं। हममें से हर कोई कितना भ्रमित है और वह यह सुनिश्चित कर लेना चाहता है कि वह सही तरह का जीवन जी रहा है। चूंकि हम चाहते हैं कि कोई हमें बताए कि हम क्या करें, इसलिए गुरुओं द्वारा हमारा शोषण किया जाता है, वह गुरु चाहे आध्यात्मिक हो या वैज्ञानिक। जब तक हम अनुगमन, अनुकरण और अनुसरण करते रहते हैं, तब तक हम जीवन की सार्थकता को नहीं जान पाते हैं।
How can one know the significance of life when all that one is seeking is success? That is our life; we want success, we want to be completely secure inwardly and outwardly, we want somebody to tell us that we are doing right, that we are following the right path leading to salvation...All our life is following a tradition, the tradition of yesterday or of thousands of years, and we make every experience into an authority to help us to achieve a result. So, we do not know the significance of life. All that we know is fear—fear of what somebody says, fear of dying, fear of not getting what we want, fear of committing wrong, fear of doing good. Our minds are so confused, caught in theory, that we cannot describe what significance life has to us.	जब तक कोई सफलता के पीछे दौड़ रहा हो, तब तक वह जीवन की सार्थकता को कैसे जान सकता है? हमारा जीवन यही तो है--सफलता चाहना, बाहरी और भीतरी संपूर्ण सुरक्षा चाहना, यह चाहना कि कोई हमें यह बताए कि हम जो कर रहे हैं वह ठीक कर रहे हैं, जिधर जा रहे हैं वही मार्ग मुक्ति तक पहुंचाने वाला मार्ग है... हमारा संपूर्ण जीवन किसी परंपरा का पालन करना मात्र रह गया है--वह परंपरा कल की हो अथवा हजार वर्ष पुरानी। और हम कोई परिणाम पा लेने के लिये प्रत्येक अनुभव को प्रामाण्य बना लेते हैं। इस प्रकार हम जीवन की सार्थकता को नहीं जान पाते। जो हम जानते हैं वह है भय, कोई क्या कहेगा इसका भय, मृत्यु का भय, जो हम चाहते हैं उसके न मिल पाने का भय, गलती हो जाने का भय, भलाई करने में भय। हमारे मन इतने भ्रमित हैं, मत-सिद्धांतों में इतने उलझे हुए हैं कि हम यह भी नहीं बता सकते

	हैं कि हमारे लिए जीवन का अर्थ क्या है।
Life is something extraordinary. When the questioner asks, "What is the significance of life?" he wants a definition. All that he will know is the definition, mere words, and not the deeper significance, the extraordinary richness, the sensitivity to beauty, the immensity of living.	जीवन तो एक अद्‌भुत घटना है। जब प्रश्नकर्ता यह प्रश्न करता है कि ‘‘जीवन की सार्थकता क्या है’’ तब वह एक परिभाषा चाहता है। इससे वह केवल परिभाषा को ही जान पाएगा, केवल शब्दों को, न कि जीने के गहन अर्थ को, न ही इसकी असाधारण समृद्धि को, सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता को, इसकी असीमता को।
-2-	– २ –
What Is Life?	जीवन क्या है?
So, in discussing what is the purpose of life, we have to find out what we mean by "life" and what we mean by "purpose"—not merely the dictionary meaning, but the significance we give to those words. Surely, life implies everyday action, everyday thought, everyday feeling, does it not? It implies the struggles, the pains, the anxieties, the deceptions, the worries, the routine of the office, of business, of bureaucracy, and so on. All of that is life, is it not? By life, we mean, not just one layer of consciousness, but the total process of existence which is our relationship to things, to people, to ideas. That is what we mean by life—not an abstract thing.	जीवन का प्रयोजन क्या है, इस संबंध में विचार विमर्श करने के लिये हमें यह जान लेना होगा कि ‘जीवन’ से हमारा तात्पर्य क्या है, साथ ही ‘प्रयोजन’ से हमारा तात्पर्य क्या है। इसका अर्थ है हम शब्दकोश के अनुसार ही न जानें बल्कि यह भी जानें कि हमारे लिये इन शब्दों की सार्थकता क्या है। निश्चय ही जीवन में प्रतिदिन के कार्यकलाप, प्रतिदिन के विचार और भावनाएं निहित रहती हैं, है न? इसमें संघर्ष, पीड़ा, व्याकुलता, छल, चिंता, कार्यालय, व्यवसाय या अधिकारीतंत्र का दैनिक ढर्रा आदि आदि शामिल है। यही सब जीवन है, है न? जीवन से हमारा तात्पर्य चेतना की केवल एक परत से नहीं होता बल्कि हमारे अस्तित्व की संपूर्ण प्रक्रिया से है, अर्थात वस्तुओं, व्यक्तियों और विचारों के प्रति अपने संबंधों से। जीवन से हमारा यही अर्थ है––न कि कोई अमूर्तता।
So, if that is what we mean by life, then has life a purpose? Or is it because we do not understand the ways of ' life—the everyday pain, anxiety, fear, ambition, greed— because we do not understand the daily activities of existence, that we want a purpose, remote or near, far away or close. We want a purpose so that we can guide our everyday life towards an end. That is obviously what we mean by purpose. But if I understand how to live, then the very living is in itself sufficient, is it not?...	तो यदि जीवन से हमारा यही तात्पर्य है तो क्या इसका कोई प्रयोजन है? या, चूंकि हम जीने के रंग–ढंग अर्थात प्रतिदिन की पीड़ा व्याकुलता, भय, महत्त्वाकांक्षा, प्रलोभन को समझते नहीं हैं, चूंकि हम अपने अस्तित्व के दैनिक कार्यकलाप को समझते नहीं हैं, इसलिए हम इसका एक प्रयोजन चाहते हैं, चाहे वह कहीं दूर हो या आसपास। हम एक प्रयोजन चाहते हैं जिससे हम अपने दैनिक जीवन के समक्ष कोई लक्ष्य रख सकें। स्पष्ट है कि प्रयोजन से हमारा यही तात्पर्य होता है। परंतु यदि मैं यह समझ लूं कि जिया कैसे जाए तो

	जीना ही स्वयं में पर्याप्त हो जाता है, है न?.. .
After all, it is according to my prejudice, to my want, to my desire, to my predilection, that I decide what the purpose of life is to be. So, my desire creates the purpose. Surely, that is not the purpose of life. Which is more important—to find out the purpose of life, or to free the mind itself from, its own conditioning and then inquire? And perhaps when the mind is free from is own conditioning, that very freedom itself is the purpose. Because, after all, it is only in freedom that one can discover any truth.	आखिर, जीवन का प्रयोजन क्या है यह अपने पूर्वाग्रह, अपनी चाहना, अपनी इच्छा और अभिरुचि के अनुसार ही तो मैं निर्धारित करूंगा। इस प्रकार मेरी इच्छा ही इस प्रयोजन को पैदा करेगी। निश्चित ही वह जीवन का प्रयोजन नहीं होगा। क्या अधिक महत्त्वपूर्ण है : जीवन का प्रयोजन खोज निकालना, या अपने मन को संस्कारबद्धता से मुक्त कर लेना और तब अन्वेषण करना? और जब मन अपनी संस्कारबद्धता से मुक्त हो जाता है तब वह मुक्ति संभवतः स्वयं में इसका प्रयोजन बन जाती है। क्योंकि अंततोगत्वा स्वतंत्रता में ही सत्य का अन्वेषण हो सकता है।
So, the first requisite is freedom, and not seeking the purpose of life.	अतः प्राथमिक आवश्यकता है स्वतंत्रता, न कि जीवन का प्रयोजन तलाशना।
-3-	– ३ –
What Is Life's Goal?	जीवन का लक्ष्य क्या है?
What is the significance of life? What is the purpose of life? Why do you ask such a question? You ask this question when, in you, there is chaos, and about you there is confusion, uncertainty. Being uncertain, you want something to be certain. You want a certain purpose in life, a definite goal, because in yourself you are uncertain...	जीवन की सार्थकता क्या है? जीवन का प्रयोजन क्या है? आप ऐसे प्रश्न क्यों पूछते हैं? आप ऐसे प्रश्न तब पूछते हैं जब आपके भीतर भारी अव्यवस्था व्याप्त होती है, और आपके इर्द-गिर्द विभ्रम और अनिश्चितता का घेरा होता है। अनिश्चितता में उलझे हुए आप कुछ निश्चितता चाहते हैं। तब आप जीवन का एक निश्चित प्रयोजन, एक निश्चित लक्ष्य ढूंढ़ते हैं, क्योंकि आप स्वयं में अनिश्चित होते हैं...
What is important is not what is the goal of life but to understand the confusion in which one is, the misery, the fears, and all the other things. We do not understand the confusion but only want to get rid of it. The real thing is here, not there. A man who is concerned does not ask what is the purpose of life. He is concerned with the clearing up of the confusion, of the sorrow in which he is caught.	यह जानना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि जीवन का लक्ष्य क्या है, बल्कि यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि हम स्वयं में भ्रमित क्यों हैं। यह क्लेश, भ्रम और इसी प्रकार की अवस्थाएं क्यों हैं। हम विभ्रम को, उलझाव को समझते नहीं है बस उससे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। वास्तविकता तो यहां है, वहां नहीं। जो जीवन से संबंध और सरोकार रखता है वह नहीं पूछता कि जीवन का प्रयोजन क्या है। उसका सरोकार तो जीवन को जंजाल बना देने वाले उलझाव और दुख की गुत्थी को सुलझाने से रहता है।

-4-	– ४ –
To Understand, not Escape, Our Daily Tortures	रोज़ाना की ज़िंदगी के कष्ट और क्लेश को समझें, न कि पलायन करें
To understand the full significance of living, we must understand the daily tortures of our complex life; we cannot escape from them. The society in which we live has to be understood by each one of us—not by some philosopher, not by some teacher, not by a guru—our way of living has to be transformed, completely changed. It think that is the most important thing we have to do, and nothing else.	अपने जीवन की संपूर्ण सार्थकता को समझने के लिए हमें इस जटिल जीवन की दिन-प्रति-दिन की यंत्रणाओं को समझना चाहिये। हम इनसे बचकर कहीं नहीं जा सकते। जिस समाज में हम रहते हैं उसे हममें से हरएक को समझना होगा--न कि किसी दार्शनिक, शिक्षक या किसी गुरु को--अपने जीने के ढंग को बदलना होगा, इसे पूर्णतया परिवर्तित होना होगा। मेरे विचार से यही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है जो हमें करना है, अन्य कुछ भी नहीं।
— 5 —	– ५ –
Why Are We Alive?	हम जीवित क्यों है?
Questioner: We live but we do not know why. To so many of us, life seems to have no meaning. Can you tell us the meaning and purpose of our living?	प्रश्नकर्ता : हम जीते तो हैं, परंतु नहीं जानते कि क्यों। हममें से बहुतों के लिये जीवन का कोई अर्थ नहीं है। क्या आप हमें हमारे जीने का अर्थ और प्रयोजन बता सकते हैं।
Krishnamurti: Now why do you ask this question? Why are you asking me to tell you the meaning of life, the purpose of life? What do we mean by life? Does life have a meaning, a purpose? Is not living in itself its own purpose, its own meaning? Why do we want more? Because we are so dissatisfied with our life, our life is so empty, so tawdry, so monotonous, doing the same thing over and over again, we want something more, something beyond that which we are doing. Since our everyday life is so empty, so dull, so meaningless, so boring, so intolerably stupid, we say life must have a fuller meaning and that is why you ask this question.	कृष्णमूर्ति : आप यह प्रश्न पूछ क्यों रहे हैं? आप मुझसे जीवन का अर्थ, उसका प्रयोजन बताने के लिये क्यों कह रहे हैं? आपका जीवन से तात्पर्य क्या है? क्या जीवन का कोई अर्थ, कोई प्रयोजन है? क्या जीना स्वयं में अपना अर्थ, स्वयं में अपना प्रयोजन नहीं है? इससे अधिक हम क्यों चाहते हैं? क्योंकि हम अपने जीवन से इतने असंतुष्ट हैं, हमारा जीवन इतना खोखला, इतना दिखावटी है, एक ही चीज़ बारंबार करते-करते यह इतना नीरस हो गया है कि हम कुछ अधिक चाहते हैं, जो हम करते आये हैं हम उससे कुछ हटकर चाहते हैं। चूंकि हमारा दैनिक जीवन इतना खोखला, इतना उदास, इतना निरर्थक, इतना उबाऊ, असहनीय रूप से इतना जड़ है कि हम कहने लगते हैं कि जीवन कुछ अधिक अर्थपूर्ण होना चाहिए और इसीलिए यह प्रश्न उठाते हैं।
Surely a man who is living richly, a man	निश्चय ही, जो व्यक्ति समग्र रूप से जी रहा

who sees things as they are and is content with what he has, is not confused; he is clear, therefore he does not ask what is the purpose of life. For him the very living is the beginning and the end. Our difficulty is that, since our life is empty, we want to find a purpose to life and strive for it. Such a purpose of life can only be mere intellection, without any reality; when the purpose of life is pursued by a stupid, dull mind, by an empty heart, that purpose will also be empty. Therefore our purpose is how to make our life rich, not with money and all the rest of it but inwardly rich—which is not something cryptic. When you say that the purpose of life is to be happy, the purpose of life is to find God, surely that desire to find God is an escape from life and your God is merely a thing that is known. You can only make your way towards an object which you know; if you build a staircase to the thing that you call God, surely that is not God. Reality can be understood only in living, not in escape. When you seek a purpose of life, you are really escaping and not understand-ing what life is. Life is relationship, life is action in relationship; when I do not understand relationship, or when relationship is confused, then I seek a fuller meaning. Why are our lives so empty? Why are we so lonely, frustrated? Because we have never looked into ourselves and understood ourselves. We never admit to ourselves that this life is all we know and that it should therefore be understood fully and completely. We prefer to run away from ourselves and that is why we seek the purpose of life away from relationship. If we begin to understand action, which is our relationship with people, with property, with beliefs and ideas, then we will find that relationship itself brings its own reward. You do not have to seek. It is like seeking love. Can you find love by seeking it? Love cannot be cultivated. You will find love only in relationship, not outside relationship, and it is because

है, जो वास्तविकता को यथावत् देख रहा है, जो उसके पास है उससे वह संतुष्ट है, जो भ्रमित नहीं रहता, वह नहीं पूछता कि जीवन का प्रयोजन क्या है। उसके लिए वह जीना ही आदि है और वही अंत। हमारी परेशानी यह है कि चूंकि हमारा जीवन खोखला है, इसलिए हम उसका प्रयोजन जानना चाहते हैं और इसी बात के लिए जूझने लग जाते हैं। जीवन का ऐसा प्रयोजन तो केवल बौद्धिक अटकल ही होगा, जिसमें कोई वास्तविकता नहीं होगी। जब जीवन के प्रयोजन की तलाश एक कुंद व मंद मन और खोखले दिल से की जाती है तब वह प्रयोजन भी खोखला ही होगा। अतः हमारा उद्देश्य हो कि अपने जीवन को कैसे समृद्ध बनाया जाए, धन इत्यादि से नहीं बल्कि आंतरिक संपन्नता से समृद्ध--और यह कोई रहस्यमय बात नहीं हैं। जब आप कहते हैं कि जीवन का प्रयोजन सुख-चैन है, जीवन का प्रयोजन ईश्वर को पाना है तब ईश्वर को पा लेने की आपकी इच्छा जीवन से एक पलायन ही है, क्योंकि आपका ईश्वर तो बस एक सुनी-सुनाई चीज़ है। आप केवल उसी चीज़ को पाने के लिए उसकी ओर जा सकते हैं जिसे आप जानते हैं। यदि आप ऐसा सोपान बनाते हैं जो उस चीज़ की ओर जाता हो जिसे आप ईश्वर कहते हैं, तो निश्चय ही वह सोपान ईश्वर नहीं हो जाता। वास्तविकता को केवल जी कर समझा जा सकता है, पलायन करके नहीं। जब आप जीवन के प्रयोजन की तलाश करने लगते हैं तब जीवन क्या है--उसे समझ नहीं रहे होते, बल्कि उससे पलायन कर होते हैं। जीवन तो पारस्परिक है, यह संबंधों में गतिशीलता है। मैं जब संबंधों को समझ नहीं पाता या संबंध जब गड्डमड्ड हो जाते हैं, तब 'मैं' कुछ अधिक अर्थपूर्ण चाहने लगता है। हमारा जीवन इतना खोखला क्यों है? हम इतने अकेले, इतने खिन्न क्यों हैं? क्योंकि हमने कभी अपने अंदर झांक कर नहीं देखा है, कभी अपने आप को नहीं समझा है। हम स्वयं से यह कभी स्वीकार नहीं करते कि हम जीवन को केवल इतना ही जानते हैं। इसलिए, इस जीवन को सर्वथा और संपूर्णतया समझा जाना चाहिए। हम स्वयं से पलायन करने को प्राथमिकता देते हैं और इसलिए संबंधों से कहीं दूर जीवन के प्रयोजन की तलाश करने लगते हैं। यदि हम अपनी क्रियाओं को समझना शुरू

we have no love that we want a purpose of life. When there is love, which is its own eternity, then there is no search for God, because love is God.	कर दें--उन क्रियाओं को समझना जो हम व्यक्तियों, वस्तुओं, विश्वासों और विचारों के साथ अपने संबंधों के दौरान करते हैं, तब हम जान पाएंगे कि संबंध तो स्वयं में अपना पुरस्कार होते हैं, उसकी आपको तलाश नहीं करनी पड़ती। यह तो प्रेम को तलाशने जैसा हुआ। क्या प्रेम आपको ढूंढ़ने से मिल सकता है? प्रेम को उपजाया-पोसा नहीं जा सकता। उसे तो आप केवल संबंधों में पा सकते हैं, उनसे बाहर नहीं। और चूंकि हम में प्रेम का अभाव है इसलिए हम जीवन में कोई प्रयोजन चाहते हैं। जब प्रेम आ जाता है, जो अपनी शाश्वतता, अनंतता स्वयं है, तब ईश्वर की तलाश नहीं रहती क्योंकि प्रेम ही ईश्वर है।
It is because our minds are full of technicalities and superstitious mutterings that our lives are so empty and that is why we seek a purpose beyond ourselves. To find life's purpose we must go through the door of ourselves; consciously or unconsciously we avoid facing things as they are in themselves and so we want God to open for us a door which is beyond. This question about the purpose of life is put only by those who do not love. Love can be found only in action, which is relationship.	चूंकि हमारा मन परिभाषाओं और अंधविश्वासपूर्ण प्रलापों से परिपूर्ण रहता है, और चूंकि हमारा जीवन बहुत खोखला है, इसलिए हम स्वयं से हटकर इसका प्रयोजन तलाशने लगते हैं। जीवन का प्रयोजन खोज पाने के लिए मुझे अपने आप का अन्वेषण करते जाना होगा। जाने-अनजाने हम चीज़ों को जैसी वे हैं वैसी ही देखने से कतराते हैं और इसलिए हम ईश्वर से चाहते हैं कि वह हमारे लिए कहीं दूर एक द्वार खोल दे। जीवन के विषय में यह प्रश्न वे ही पूछते हैं जो प्रेम नहीं करते। प्रेम को तो केवल क्रिया में अर्थात संबंधों में ही पाया जा सकता है।

Edited with Infix PDF Editor
- free for non-commercial use.
To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm